साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 2, अंक 28, जनवरी(प्रथम), 2018

जब चंदा मामा रोने लगे

अभी कल ही की रात
मैं देखता हूं कि
चंदा मामा रोने लगते हैं
रोते हैं, रोते हैं, हिचक–हिचक कर रोते हैं
कभी मेघ रानी उनके आँसू पोछने आती है
तो कभी पवन अंकल तेज बहकर उन्हें सुकून देना चाहते हैं
पर मामा है कि रोये जा रहे, रोये जा रहे, और कलप–2 कर रोये जा रहे

नदियाँ भर गई, नाले भर गए और सड़के भर गई
यहाँ तक कि उन्हें गुरुत्वाकर्षण से कहीं सुनामी आ गया
एक दूनिया डूब गई और दूसरी दूनिया रच गया
पर फिर भी उनका विलाप बंद न हुआ

देवर्षि नारद ने उड़ते हुए खबर देवलोक तक पहुँचाई
सारे देव चकित, हाय धरा पर कैसी विपदा आई
नतमस्तक मामी शची जब मामा सम्मुख आए
नारी शक्ति को देख नतमस्तक, उनकी आँखे फिर लबलबाई
कहने लगे कि देखो धरा पर मानव बन गया कसाई

अभी ही कल तक गुड़िया, दामिनी संग मेरे खेला करती थी
आंगन में वह मुझे नचाती, मुझे देख ही सोया करती थी
जाने कैसा वह निष्ठूर संतान
छीन लिए उससे, उसका सम्मान

अब मैं रोना न छोड़ूंगा
हर आँखों में इतनी अश्रु दूँगा
फिर या तो वे मर जाएंगे
या मैं रोता–रोता मर जाऊँगा।।